दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Dilkhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07, 04/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	0	3	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dilkhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____ टिप्पणी (Remarks): ____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन संतकाव्यधारा के प्रतिनिधि-कवि 'कबीर' की साखियों के संग्रह 'कबीर ग्रंथावली' के 'बिरह कौ अंग' से लिया गया है, जिसका संकलन 'बाबू श्यामसुंदर दास' ने किया है। इस दोहे में कबीर ने हरि के दर्शन की भूखी आँखों की विरह स्थिति का वर्णन किया है।

कबीरदासजी कहते हैं कि आँखों में विरह का त्याग सताने लगा है, और दिनों-दिन इनमें नीरसता आ रही है, हे ईश्वर, आप दर्शन कब होगे, उस दिन का मुझे बेसब्री से इंतजार है।

अर्थात् भक्ति में लीन कबीर, अब परमात्मा से मिलन की तड़प से व्यथित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष →

(1) विरह की स्थिति का मार्मिक प्रस्तुतीकरण।

(2) कबीर पर वैष्णवी भक्ति-भावना का प्रभाव झलकता है।

(3) 'तलफै बिनु बालम मोर जिया' में भी कबीर का यही भाव व्यक्त हुआ है।

(4) 'सधुक्कड़ी भाषा' का प्रयोग कबीर की विशेषता है।

(5) भक्त की मनोवैज्ञानिक स्थिति का वर्णन, आंतरिक मन को पहचानने की क्षमता का उदाहरण।

(6) अनुभाविक ज्ञान पर बल।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्यांश सूफीकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद 'जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य के 'नागमती वियोग खण्ड' से लिया गया है। इसमें 'नागमती' अपनी विरह-दग्ध अवस्था का वर्णन करती है।

बारहमासा वर्णन में फाल्गुन का महीना आ गया है और जिस शरीर पर प्रिय का विरह है उसी पर हवाएं झकोरे दे रही है अर्थात् विरह को और गंभीर बना रही है। सरोवर में फूल खिल रहे, वनस्पति भी अपनी यौवनावस्था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैं पड़ी जली हूँ। फाल्गुन के औरों के मन में चंचलता भर दी है लेकिन मेरी स्थिति तो भिन्न बनी हुई है।
अब तो रात-दिन मेरे मन में एक ही विचार आता है कि हे प्रिय! आप कब लौटोगे। अंत के दोहे में नागमती के विरह में शरीर के क्षति होकर राख हो जाने तो, राख उस ~~पवन~~ जगत पर पड़े जहाँ पति पैर रखें अर्थात् समर्पण की भावना।

विशेष—
1) जायसी ने नागमती के विरह-दग्ध अवस्था का मार्मिक चित्रण किया है।
2) आ॰ शुक्ल ने इस विरह को 'आशिक-माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं बल्कि हिन्दू गृहिणी की विरह वाणी' कहा है।
3) बारहमासा काव्य रूढ़ि का प्रयोग।
4) छंद : चौपाई व दोहा
5) भाषा ठेठ अवधी व लोकजीवन को उभारा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) अपनो स्वारथ को सब कोऊ।
चुप करि रहौ, मधुप रस-लंपट, तुम देखे अरु वोऊ।।
औरो कछू संदेस कहन को कहि पठयो किन सोऊ।
लीन्हें फिरत जोग जुवतिन को बड़े सयाने दोऊ।।
तब कत मोहन रास खिलाई जो पै ज्ञान हुतोऊ?
अब हमरे जिय बैठो यह पद होनी 'होउ सो होऊ'।।
मिटि गयो मान परेखो ऊधो हिरदय हतो सो जोऊ।
सूरदास प्रभु गोकुलनायक चित-चिंता अब खोऊ।।

दी गई पंक्तियाँ भक्तिकालीन कृष्ण-काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि 'सूरदास' द्वारा रचित 'भ्रमरगीतसार' से ली गई हैं, जिसका संपादन आ० रामचन्द्र शुक्ल ने किया है। इन पंक्तियों में गोपियाँ, भँवरे के माध्यम से 'उद्धव' पर व्यंग्य कर रही हैं, और विरह का वर्णन भी।

गोपियाँ कह रही हैं कि सब अपने-अपने ~~स्वारथ~~ स्वार्थ को देखते हैं, हे काले भँवरे, शांत रहो, तुम जैसे बहुत देखे हैं, और कोई संदेश नहीं है जो हमें योगमार्ग सिखा रहे हो। हे उद्धव, तुमको

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्ण ने कौनसा रस खिला दिया है जो वापस भी बातें कर रहे हो। हमारे हृदय में तो कान्ह बैठ गये हैं जो होगा देखा जाएगा। सूरदास विनती करते हैं कि हे प्रभु, इस बात की चिंता आप को नहीं सताती क्या?

विशेष -

① गोपियों के विरह का मार्मिक वर्णन।

② 'अब मिलसता नाहिं, जो निरखु हैं भड़े' का भाव यहाँ भी प्रदर्शित हुआ है।

③ उद्धव को भँवरे की उपमा दी गई है।

④ सगुण व निर्गुण का द्वन्द्व चल रहा है लेकिन गोपियाँ तो सगुण/प्रेम पर ही अडिग।

⑤ ब्रजभाषा की मिठास व अलंकारों का सुंदर प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

प्रस्तुत दोहा रीतिसिद्ध कवि 'बिहारी' के एकमात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से लिया गया है जिसके संपादक आधुनिक कवि पं. जगन्नाथ दास रत्नाकर हैं। इन पंक्तियों में कवि ने जीवन ~~...~~ में होने वाली छोटी-छोटी दशाओं के वर्णन को बताया है।

कवि ~~...~~ कह रहे हैं कि थोड़ी सी आनाकानी अर्थात् झगड़ा हो जाने पर प्रेम फीका पड़ जाता है अर्थात प्रार्थना व्यर्थ हो जाती है। मन भी बिछुड़ जाता है और ~~...~~ जीवन नीरस हो जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष →

① प्रस्तुत पंक्तियों में बिहारी के जीवन सम्बन्धी मान्यताओं का वर्णन किया गया है।

② द्वितीय पंक्ति में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

③ ब्रजभाषा व शब्दों की तराश का अनुपम उदाहरण।

④

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

प्रस्तुत पंक्तियाँ द्विवेदीयुगीन नवजागरणीय व राष्ट्रीय चेतना से ओत प्रोत कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित कविता 'भारत-भारती' से ली गई हैं। इनमें कवि ने भारत की अवनति के कारण व वर्तमान स्थिति का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है।

कवि बता रहे हैं कि सभी ज्ञान-विज्ञान में जिस देश का परचम लहराता था व सारे विश्व को मानवता का ज्ञान दिया, उसका स्वयं का ज्ञान उल्लू बोल रहा अर्थात् पतन हो रहा है। हिन्दुओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि अब तो जागो नहीं तो लोग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसे तुम्हारी जाति का ही पतन हुआ हो न कि किसी और का।

अर्थात् नयी ऊर्जा व चेतना से ओत प्रोत होकर राष्ट्र को फिर उन्नति पर ले जाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

विशेष -

① ~~नवजागरि~~ नवजागरणीय चेतना की भावना का संदेश।

② भारत के प्राचीन पर गौरवान्वित अनुभव करना तथा वर्तमान पराधीनता व निष्क्रियता पर कटाक्ष।

③ गुप्त जी ने ही कविता में खड़ी बोली के प्रयोग को सफलतापूर्वक सिद्ध किया।

④ 'उल्लू बोलना' जैसे मुहावरों का प्रयोग कर रोचकता में वृद्धि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) दिनकर का मानवतावादी दर्शन कुरुक्षेत्र में किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है? प्रकाश डालिये। 20

रामधारी सिंह 'दिनकर' समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे और उन्होंने 'कुरुक्षेत्र' में अपने मानवतावादी विचारों को 'भीष्म' के चरित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

उनका कहना है कि पहले तो उन्हें 'अशोक' के निर्वेद ने आकर्षित किया, फिर 'कलिंग विजय' कविता लिखते-लिखते जीवन की हल समस्या युद्ध ही लगने लगी। 'दिनकर' अहिंसावादी दर्शनों के पर्दों से निकलकर समाज में व्याप्त शोषणों, पूँजीवादी व्यवस्था व नैतिकता पर आधारित रहने के लिए युद्ध तक की भी संभावना को सही ठहराते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनका यह दर्शन न केवल कुरुक्षेत्र बल्कि 'रश्मिरथी' आदि में भी व्यक्त हुआ है।

वे ~~इहलौकवाद~~ को परलोकवाद से ऊपर प्राथमिकता देते हैं -

"ऊपर सबकुछ शून्य-शून्य कुछ भी नहीं गगन में,
धर्मराज जो कुछ भी है, मिट्टी में जीवन में।"

अतः उनका यह विचार ~~[illegible]~~ इहलोक को समृद्ध व समतामूलक बनाने पर ज़ोर दे रहा है।

उनका मानवतावादी दर्शन, व्यक्ति के स्वत्व की रक्षा करने में है -

'छीनता हो स्वत्व कोई और तू
तप त्याग से काम ले, यह पाप है।'

कहकर 'दिनकर' स्वतन्त्रता के व्यक्तिगत होने पर बल देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे व्यक्ति को आत्मविश्वास व निडर होकर चलने को कहते है। वे भीष्म पितामह के द्वारा यह भी कहलावा देते हैं कि जीवन रंगों से भरा होना चाहिए, अपनी स्वस्थ इच्छाओं की पूर्ति करना कोई पाप नहीं है। 'न था मुझे विश्वास, स्नेह शील सुंदर है, कोमलता के लौ व्रत.' कहकर यही भाव व्यक्त किया है।

वे विज्ञान व तकनीक के प्रयोग पर बल देते हैं और उसका मानवता के कल्याण के लिए ~~उपयोग~~ उपयोग करने की और इशारा करते हैं। 'फेंक दे मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार' कहकर वे विज्ञान का सही व तर्कसंगत उपयोग पर बल देते हैं।

वे गरीबी व दुखियों के मूल कारण तक पहुँचते है और

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बताते हैं कि वितरणमूलक अन्याय की व्यवस्था ने गरीबी को पैदा किया है।

"जब तक मनुज-मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा, शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा।" कहकर समतामूलक समाज पर बल देते हैं और ऐसे वितरण की चेष्टा करते हैं जहाँ न तो किसी को अधिक हो, और न ही किसी का कम हो।

उन्होंने 'जीओ और जीने दो' की भावना का समर्थन इसलिए किया है कि हर वर्ग अपने-अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके व उनका शोषण न हो सके।

स्पष्ट है कि 'दिनकर' ने कुरुक्षेत्र में अपने वर्णित मानवतावादी दर्शन को व्यक्त किया है। जिसके कारण उनको ख्याति प्राप्त है कि उन्होंने भेदभाव को केन्द्र बनाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत प्रस्तुत कीजिये। 15

'मलिक मुहम्मद जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' में जब रत्नसेन, हीरामन तोते के आग्रह पर पद्मावती को पाने सिंहलद्वीप चला जाता है और काफी समय तक नहीं लौटता तो 'नागमती' की विरहजन्य अवस्था का मार्मिक चित्रण किया है।

कुछ आलोचक इसे आदर्श विरह मानते हैं जो एक आदर्श भारतीय नारी में अपेक्षित है जैसे आ० रामचन्द्र शुक्ल जो कुछ इसे मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण मानते हैं जैसे साही व गणपति चंद्र आदि।

आ० रामचन्द्र शुक्ल ने इस विरह को 'शाहिर-माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप न कहकर हिन्दू गृहिणी की विरह वाणी' कहा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्योंकि भारतीय समाज में प्राय! नारी ही विरह का पात्र होती है न कि पुरुष।

लेकिन, रत्नसेन के एक पत्नी होने के बावजूद, दूसरी पत्नी की लालसा रखना ही मूलतः इस बात का प्रमाण है कि मध्यकालीन नारी परतंत्रता अनुभव कर रही थी।

रत्नसेन अपने भोग-विलास व सौन्दर्यमकता की इच्छा को, नागमती से ऊपर रखता है। यह स्वाभाविक है कि पति के घर न लौटने पर, पत्नी का मन व्यथित हो जाता है लेकिन रत्नसेन द्वारा सिंहलद्वीप चले जाने पर कोई संदेश नहीं आता है जो उसकी स्थिति को और गंभीर बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ तक कि हीरामन तोता भी 'नागमती' की सुन्दरता को 'पद्मावती' के आगे कुछ नहीं बताता जो कि अंदलाव पैदा करती है। नागमती विरह के दौर में अपनी शारीरिक हालत को कमजोर कर, वन-वन में घूमती है जो कि दासता का अनुभव कराती है।

लेकिन इस दासता की भावना के बावजूद, नागमती का प्रेम एकनिष्ठ व समर्पण भाव उसे उच्चकोटि की भावना का प्रतीक बनाता है,

"यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव"

कहकर वह अपने प्रेम की आहुति देने को तैयार है जो उसकी स्वेच्छा दर्शाती है।

स्पष्ट है कि कुछ मायने में दासता तो कुछ में आदर्श प्रेम ~~की~~ प्रतिबिंबित ~~होती~~ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिहारी की समाहार-शक्ति का उद्‌घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी की समाहार-शक्ति के कारण ही उन्हें 'गागर में सागर' भरने वाला कवि कहा जाता है। रीतिसिद्ध काल में उन्होंने नायिका भेद, रस आदि तत्वों के लिए अलग से लक्षण-ग्रंथ नहीं लिखे बल्कि कविता के तत्व रस, नायिका भेद, अलंकार, वक्रता आदि को अपनी कविता में शामिल किया जो इनकी समाहार क्षमता को दर्शाता है।

"तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग, रति रंग
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग॥"

अर्थात कविता के रस में जो डूब गये वो पार हो गये और जो न डूबे वे व्यर्थ ही पश्चाताप कर रहे हैं। बिहारी ने भाषा को व्याकरण की दृष्टि से,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व मिश्रण से इतना प्रतिनिष्ठित कर दिया कि आ. शुक्ल को भी कहना पड़ा - "बिहारी की "भाषा चलती हुई भाषा है, लेकिन साहित्यिक है, प्रतिनिष्ठता दिखाई देती है।"

शब्दों की पकड़ व तराश पर बिहारी की कलम का अद्भुत प्रभाव था -
"कहत, नटत, रिझत, खीजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन मे करत है, नैनहु ही सों बात।"
एक ही पंक्तियों में सात क्रियाओं का प्रयोग सात मनोभावों का व्यक्त करना उनके कौशल का प्रमाण है। बिहारी अनुभावों के कवि हैं इसलिए आधुनिक रसिकों व दरबारियों को लुभाना उनके लिए आसान है।

बिहारी की शृंगारिक वर्णन में न केवल विप्रलंभ बल्कि उनके चारों तत्व पूर्वराग, मान, प्रवास और करुणा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि दिखाई पड़ते है। उन्होंने नारी के दैहिक सौन्दर्य वर्णन से लेकर राधाकृष्ण में अपनी गहनतम अनुभूति को प्रकट किया है।

"या अनुरागी चित्त की गति समुझै न कोई
ज्यों-ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यौं-त्यों उज्जलहोय।"

बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि होने के ये प्रमाण है, उन्होंने राजनीतिक चेतना के माध्यम से जयसिंह को राजकाज में ध्यान लगाने व धर्म के आडंबरों का विरोध व साधारण जीवन के पात्रों का उपयोगकर समाहार-शक्ति का उदाहरण दिया है।

इन्हीं सब कारणों से उन्हें लिए ग्रियर्सन तक ने 'बिहारी की बराबरी पूरे योरोप में कोई नहीं कर सकता।'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) बिहारी की समाज-चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिसिद्ध काव्य से जुड़े होने के कारण, रीतिकालीन मानसिकता में प्रभाव में लिखने के कारण प्राय: यह धारणा बन गयी थी कि बिहारी की कविताओं में सामाजिक पक्ष नहीं है, उन्होंने कविता को यश, सुख व धन का साधन माना है और वे दरबार में व दरबारों के लिए कवि हैं।

लेकिन आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन से यह सिद्ध हुआ है कि बिहारी की कविताएं सामाजिक पक्ष से अछूता नहीं हैं, उन्होंने न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक, धार्मिक पक्षों पर भी अपने ~~मत~~ मन्तव्य व्यक्त किया हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजघरानों से जुड़े होने के कारण, उनका यह समाज-चेतना थोड़ा कमजोर दिखाई पड़ता है लेकिन अनुपस्थित तो नहीं।

राजा जयसिंह के एक विरोही कन्या के प्रेम में पड़ने पर, एक दोहे लिखकर राजकाज की स्थिति बदल देने वाली क्षमता बिहारी में ही हो सकती है।

"नहिं पराग, नहिं मधुप मधु, नहिं विकास यहि काल,
अलि कलि ही सों बंध्यौ, आगै कौन हवाल।"

यह बिहारी की ~~राजनितीक~~ राजनीतिक उत्तरदायित्व को निभाने का दृष्टिकोण है।

धार्मिक आडंबरों का विरोध उन्होंने किया है, ~~उनका~~ कि मन को चंचल रखना व ~~सिर पर~~ माथे पर तिलक धारण करना विरोधाभास की स्थिति को पैदा करता है, ऐसे संत ढोंगी होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम
मन काँचे नाँचे वृथा, साँचे राँचे राम।"

यहाँ तक कि उन्होंने अपनी कविताओं में राजसी वर्ग के चरित्रों को जगह न देकर साधारण-वर्ग के चरित्रों को स्थान दिया, जिससे उनकी शहर-गाँव समानता की स्थिति उजागर होती है।

हालाँकि, यह बात जरूर है कि उन्होंने सामाजिक चेतना के उद्देश्य से कविताएँ नहीं लिखी, जैसे कि कविता को उपयोगितावादी, पुरस्कार व धन के साधन के रूप में देखना।

उनकी यह सीमा, व ग्रामीण युवतियों के सौन्दर्य को देखकर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

उनको गँवार कहना, उनकी समाज-चेतना पर कुछ आक्षेप है।

"गदराने तन गोरटि, ऐपन आड़ लिलार"
हूठ्यों दै इठलाई, दृग गाँवदि सुमार।"

अतः स्पष्ट है कि बिहारी के काव्य में समाज-चेतना के तत्व तो मिलते ज़रूर हैं लेकिन उनकी सीमित मात्रा, उन्हें शृंगारिक ऐहिक-चेतना वाले कवि के रूप में ही प्रसिद्धि दिला पाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कुरुक्षेत्र के काव्यरूप पर विचार कीजिये। 15

कुरुक्षेत्र रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित लम्बी कविता श्रेणी की रचना मानी जाती है, हालाँकि इस बात काफी विवाद है क्योंकि कुछ आलोचक उसे 'प्रगतिवादी विचारधारा का महाकाव्य' मानते हैं जैसे शंभूनाथ पाण्डे तो कुछ उसे 'वस्तुपरक लंबी कविता' जैसे अज्ञेय आदि।

गौरतलब है कि कुरुक्षेत्र में युधिष्ठिर के माध्यम से युद्ध की निस्सारता पर बल दिया है लेकिन कविता के पांच खण्डों तक अपने भाषण को जारी रखने वाले भीष्म पितामह के माध्यम से 'दिनकर' विभिन्न विचारों को बतलवाते हैं जो कि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विचार प्रधान भाव कविता को प्रदान करता है।

'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' के बारे में कहते हैं 'हुआ यूँ कि पहले तो मुझे अशोक के निर्वेद ने आकर्षित किया, फिर 'कलिंग विजय' कविता लिखते-लिखते उसे पता लगा जैसे युद्ध की समस्या जीवन की मूल समस्या हो।' और इसी कारण उन्होंने युधिष्ठिर को युद्ध में विजय की तुलना वहाँ पर हुए रक्तपात के सामने तुच्छ बताया है।

भीष्मपितामह के माध्यम से 'दिनकर' मानवतावादी मूल्यों की स्थापना जरूर करते हैं, इहलोकवाद को परलोकवाद से ऊपर प्राथमिकता देते हैं लेकिन उन्होंने प्रगतिवादी मूल्यों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भी यांत्रिकता को नहीं थोपा है, जो सत्य यथार्थ को कहने के लिए आवश्यक है उतने ही शामिल किया है।

"ऊपर सब कुछ शून्य। शून्य कुछ भी नहीं गगन में, धर्मराज जो कुछ भी है, मिट्टी में जीवन में।"

व 'नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो' आदि वक्तव्यों के माध्यम से दिनकर अपने विचार रखते हैं।

अत: कुरुक्षेत्र का काव्यरूप 'प्रगतिवादी साहित्य का महाकाव्य' न होकर एक 'विचारप्रधान लम्बी कविता' जो मानव समाज से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर गहनतम विचार करती है व विज्ञान व तकनीक के सटीक प्रयोग से समाधान की संभावना तलाशती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मलिक मुहम्मद जायसी सूफीकाव्यधारा के कवि हैं जो कि 'सर्वेश्वरवाद' से प्रभावित है जिसका आधार सूफी दर्शन 'तसव्वुफ' है। जबकि कबीरदास सिद्ध व नाथ साहित्य, अद्वैतवाद जैसे दर्शनों से गुजरकर भक्ति तक पहुंचते है अत: उन पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव है।

जहाँ कबीर का रहस्यवाद रूखा व शुष्क, वहीं जायसी का रहस्यवाद सुन्दर व रमणीय है।

आ० शुक्ल का मत है कबीर में वाक्चातुर्य था, प्रतिभा थी लेकिन लेकिन प्रकृति की सुन्दरता में ईश्वर को नहीं देख सके --- जबकि जायसी का रहस्यवाद सुन्दर व रमणीय है जिनकी भावना ऊँची कोटि की है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी, सृष्टि को परमसत्य की अभिव्यक्ति समझते हैं अतः सम्पूर्ण प्रकृति में वे ईश्वर का दर्शन कर पाते हैं उनका रहस्य भावनात्मक व बहिर्मुखी है।

"देखि दसन जोति निरमई, बहुतैं जोति जोति ओहि भई
रवि ससि नखत जोति ओहि भई, रतन पदारथ मानक मोती"

अर्थात् वे सम्पूर्ण सूर्य, चन्द्रमा, हीरों आदि की सुन्दरता में परमसत्ता का अनुभव करते हैं।

यहाँ तक कि उन्होंने पशु-पक्षियों आदि की सुन्दरता को भी काव्य में शामिल किया है 'पिउ सूँ कहेउ संदेसड़ा, हे भवँरा हे काग।

कबीर का रहस्य साधनात्मक व अंतर्मुखी है, वे कुण्डलिनी व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महाकुण्डलिनी के मिलन पर ज्यादा ध्यान देते हैं।

"लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।"

लेकिन कुछ प्रसंग ऐसे हैं जहाँ जायसी अपने रहस्यवाद को साधनात्मक होने से नहीं बचा पाते। कबीरदास भी की कविताओं में ऐसे कई प्रसंग हैं जहाँ वे भावनात्मक रहस्यवाद को भी व्यक्त करते हैं-

"तलफै बिनु बालम मोर जिया,
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया, तलफ-तलफ के
भोर किया।"

लेकिन भावनात्मक रूप जायसी का रहस्यवाद अद्वितीय है सुन्दर व रमणीय जो कबीर पर भारी पड़ते दिखाई देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4\. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। जब पूज्यभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धाभाजन के सामीप्य-लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिये। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि से आनन्द का अनुभव होने लगे–जब उससे सम्बन्ध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्ति रस का संचार समझना चाहिये।

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य में निबंध विधा के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक आ० रामचन्द्र शुक्ल के 'श्रद्धा और भक्ति' निबंध से लिया गया है जो 'चिन्तामणि' में संकलित है। यह मनोविकारपरक निबंधों में सर्वश्रेष्ठ है। इसमें शुक्ल जी ने श्रद्धा और प्रेम जैसे मनोभावों का वर्णन किया है।

शुक्ल जी बताते हैं कि भक्ति, जब किसी श्रद्धेय पर प्रेम का भाव जागने से बनती है। जिसके प्रति हम श्रद्धा रखते हैं, उसके दर्शन हेतु प्रेमपूर्वक लालायित रहने से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्ति का भाव पैदा होता है।
और उस श्रद्धेय के प्रति
नौ विधियों के माध्यम से
आकर्षण पैदा होता भक्ति का
संचरण होता है।

विशेष

1. मनोविकारपरक निबंधों में मनोभावों के अन्तर्संबंध को बताया है।

2. वैज्ञानिक शैली का प्रयोग, पहले सिद्धांत फिर उसके पक्ष में तर्क प्रस्तुत करना।

3. 'श्रद्धा और प्रेम के योग नाम भक्ति है' में सूत्र शैली का प्रयोग हुआ है।

4. भाषा सरल, पठनीय व विचारात्मक।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) तुम्हें पता था मैं भीग जाऊँगी। और मैं जानती थी तुम चिन्तित होगी। परन्तु माँ...
...मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं। भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती।
चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आये थे। मैं जानती थी वर्षा होगी। फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गयी।
एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया। फिर बूँदें पड़ने लगीं। वस्त्र बदल लूँ, फिर आकर तुम्हें बताती हूँ। वह बहुत अद्भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्भुत।

प्रस्तुत गद्यावतरण ~~को~~ हिन्दी नाटक में आधुनिक भावबोध पैदा करने वाले लेखक 'मोहन राकेश' के प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के प्रथम अंक से लिया गया है। इसमें नाटक की नायिका 'मल्लिका' अपने बारिश में भीगने के अनुभव को बता रही है।

मल्लिका कह रही है कि माँ तुम चिंतित पड़ाइ हो लेकिन जो बारिश में भीगने का अनुभव था ~~वह~~ उसका अनुभव अद्वितीय था, वर्षा होने की आशंका के बावजूद

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैं घाटी से नीचे उतर गयी और अपने प्रियतम के साथ बारिश में अतुलनीय अनुभव प्राप्त किया।

विशेष -

① मोहन राकेश की नाट्य कला का अनुपम उदाहरण।

② संवाद शैली प्रभावी व नाटकीय

③ भाषा तत्सम संयुक्त प्रवाहमय व संप्रेषणीय।

④ प्रकृति को 'उद्दीपन विभाव' दिखाया गया है।

⑤ आधुनिक पीढ़ी के भाव बोध को दर्शाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदाहरण, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के नाटक सम्राट 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'स्कंदगुप्त' ~~ख~~ नाटक से ली गई है जहाँ देवसेना, विजया को कविता संबंधी विचारों से अवगत करा रही है।

देवसेना कहती है कि कविता सौंदर्य के साथ मनुष्य को अपने उत्तरदायित्व निभाने के लिए प्रेरित करती है। जिस प्रकार कमल का सौंदर्य मुखमंडल पर फैल जाता है उसी प्रकार वीरता, त्याग ~~दया~~ और दया का सौंदर्य कविता में निहित होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष —

① कविता को केवल सौन्दर्य की नहीं बल्कि अन्य भावों को शामिल करने वाली बताया है।

② कविता का महत्व केवल कवि के लिए नहीं बल्कि समाज के लिए बताया है।

③ कविता क्या है निबंध में आ० शुक्ल ने कविता को भावयोग बताया जो कि कर्मयोग व ज्ञानयोग के समकक्ष है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) शहरी जीवन के चित्रण में अधिक सफलता न मिलने के बावजूद प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? युक्तियुक्त उत्तर लिखिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'नई कहानी में 'भोगे हुए क्षण' और 'अनुभव की प्रामणिकता' को जिस रूप में पेश किया गया था, उससे अमरकांत का दृष्टिकोण ही नहीं, उनकी कहानियों का मिजाज़ भी भिन्न है।' इस कथन के आलोक में अमरकांत की कहानी 'जिंदगी और जोंक' के मर्म का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नई कहानी' स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पैदा हुई एक विधा है ~~जिसमें~~ कहानी का परम्परागत ढांचा टूटकर एक नये ढाँचे में ढलता है, पहले कहानियों में जहाँ आदि, मध्य, और अन्त का क्रमिक विकास होता था वहीं नई कहानियों में कथानक का ढाँचा, आधुनिक मनुष्य के मनोभाव की तरह ही हो गया। जैसे जीवन के यथार्थ में अनिश्चितता है वैसे ही कहानियों के कथानक में भी।

नई कहानियों थोपे हुए आदर्शवाद की बजाय 'भोगे हुए यथार्थ'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पर बल दे रही थी न कि 'सोचे हुए यथार्थ' पर। इन कहानियों में संबंधों के बिखराव, अनिर्णय की समस्याओं, आदि के 'अनुभवों की प्रामाणिकता' दिखाई देती हैं जैसे यही सच है (मन्नू भंडारी) या एक और जिन्दगी (मोहन राकेश) लेकिन इस दृष्टि 'अमरकांत' द्वारा रचित कहानियाँ भिन्न हैं, इनका दृष्टिकोण नई कहानियों में, वर्तमान परिदृश्य में बदलते भेदभाव के तरीकों व वर्गीय जड़ता को दिखाना रहा है। उनकी कहानियाँ नई कहानी के ढाँचे को स्वीकार नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कर पाती है।' 'जिन्दगी और जोंक' में चरित्र 'रजुआ' की दयनीय स्थिति को दिखाया गया है जहाँ वह अपनी आर्थिक गरीबी की हालत में भी आशावादी रहकर जिंदगी से चिपका रहता है।

इसमें कहानी का चरित्र 'मैं', रजुआ को पत्र लिखता है कि उसकी दयनीय स्थिति की खबर रखें लेकिन यह बात यहीं समाप्त हो जाती है और 'रजुआ' की जिंदगी या तो उसने जोंक की तरह चिपक जाती है जो उसे मरने नहीं देती या 'वह' जिंदगी से जोंक की तरह, इस आशा में कि कभी तो उसकी स्थिति बेहतर होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

इसमें 'अमरकांत' ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की निष्क्रियता पर भी सवाल उठाये हैं इन्होंने बताया कि काम के बदले में, बहुत कम दाम व निष्क्रिय सोच ने 'रजुआ' की यह स्थिति बनाई।

स्पष्ट है कि आधुनिक भाव बोध के वातावरण में यह कहानी, नई कहानियों की प्रवृत्ति से अलग नजर आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोलाराम का जीव' कहानी की संवेदना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भोलाराम का जीव' हरिशंकर परसाई जी द्वारा लिखित, नयी कहानी की श्रेणी में आने वाली कहानी है।

इसमें लेखक ने अफसरशाही की विद्रूपताओं, भ्रष्टाचार की व्यापकता, ठेकेदारों द्वारा किये जा रहे कार्यों में अनैतिकताओं आदि को उजागर किया है।

इसमें 'भोलाराम का जीव' पेंशन की फाइलों में अटका पड़ा रह जाता है जिनकी ओर किसी की नज़र नहीं जाती क्योंकि लेन के कार्यों को अफसर लोग प्राथमिकता नहीं दे पाते हैं।

इन्हीं पेंशन फाइलों में हो रहे भ्रष्टाचार के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

माध्यम से लेखक ने ब्यूरोक्रेसी के क्रियान्वयन पर सवाल खड़े किए हैं। भोलाराम के जीव को मुक्ति तभी मिल सकती जब यहाँ से उसका पेंशन का मामला खुलवे।

एक ऐसे ही अन्य प्रसंग में वे ठेकेदारों द्वारा नयी-नयी मंजिलों के निर्माण में हो रही धाँधली की ओर इशारा करते हैं जहाँ अफसरों व ठेकेदारों आदि के गठजोड़ से आम आदमी को होने वाले नुकसानों के बारे में बताया गया है।

उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग कर अफसरशाही को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

राजनीतिक नेताओं की चापलूसी करने वाला बताया है, व भोलाराम जैसे आम-आदमी का काम फाइलों में रुक जाता है, और सेवाओं के लाभ का इंतजार करते उनकी मौत तक हो जाती है।

इस कहानी की प्रासंगिकता वर्तमान समय में और बढ़ गयी है जहाँ न केवल राजनीतिक दलों/महत्व वाले कार्यों पर बल दिया जाता है बल्कि इसके कारण सामान्यजन को होने वाली हानि को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' कहानी के कथ्य पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कफ़न' प्रेमचंद की कहानी कला के अंतिम दौर की कहानी है जिसमें वे आदर्शवादी मूल्यों, हृदय परिवर्तन आदि 'आदर्शवादी' दामन से निकलकर 'यथार्थवाद' का चोला पहने हुए नज़र आए हैं।

इस कहानी में 'घीसू और माधव' के माध्यम से प्रेमचंद ने गरीबी और हालात की दुर्व्यवस्था का पर्दाफाश किया है बल्कि दलितों के प्रति समाज में होने वाले प्रतिकारों को भी दिखाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहानी में माधव की पत्नी गर्भपात के दुःख के कारण मरी जा रही है और, घीसू और माधव आलू सेंक के खा रहे हैं।

इस संवेदनहीनता का कारण है कि घीसू और माधव को कोई काम नहीं लेना, कर्महीन होने के कारण आय का कोई स्रोत नहीं, वे पिछले 20 सालों से भरपेट खाना भी नहीं खाया, तो माधव सोचता है कि 'घीसू' ज्यादा आलू खा जाएगा।

कहानी का चरम वहाँ दिखता है जहाँ वे कफन के लिए पैसा एकत्रित करते हैं" जीते जी तन को ढँकने के लिए चिथड़ा नहीं, और मरने पर नया कपड़ा चाहिए, कैसी विडम्बना है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और कफन के लिए इकट्ठे पैसों से वो खुद ही भरपेट खाना नहीं खाते बल्कि भिखारियों को भी खाना खिलवाते हैं (सोचने को मजबूर हूँ कि घीसू-माधव जैसे लोग अभाव के बावजूद दिल से बड़े हैं)

"यह ~~[illegible]~~ बैकुण्ठ न जाएगी तो क्या वो जाएंगे जिनके पैर मोटे हो गए हैं, उनसों की दुर्बलताओं का फायदा उठा-उठाके।"

अतः प्रेमचन्द ने न केवल समाजी बल्कि सामंतवादी व समाज में व्याप्त संवेदनहीनता को प्रखर चेतना के साथ व्यक्त किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation